वन्देमातरम् मन्त्र के प्रणेता—
बंकिम चन्द्र

54

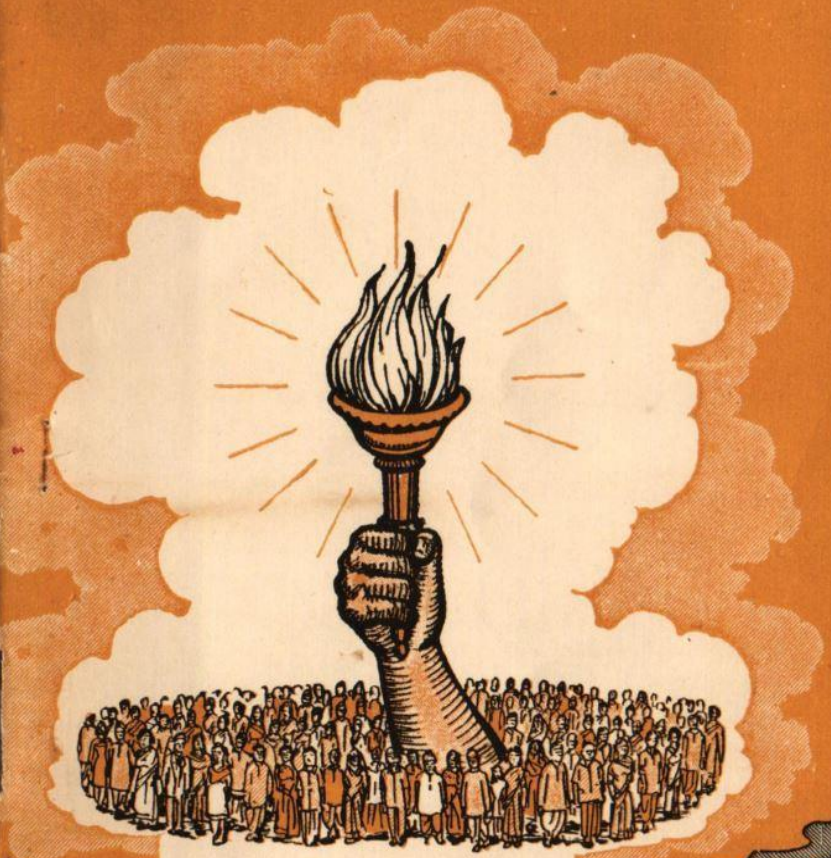

लेखक :—

श्री सत्यभक्त

युग-निर्माण-योजना-मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



वन्दे मातरम् मन्त्र के प्रणेता— बंकिम चन्द्र

श्री बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय आज से सौ वर्ष पूर्व बंगाल के बहरामपुर जिले में डिप्टी मजिस्ट्रेट के पद पर कार्य कर रहे थे। डिप्टी मेजिस्ट्रेट तो उस समय और भी कई भारतीय बना दिये गये थे, पर बंकिम बाबू में सरकारी नौकरी करते हुए भी जातीयता की रक्षा का जो भाव था, उसका उदाहरण बहुत कम देखने को मिलता है।

बहरामपुर में अंग्रेजी फौज की एक छोटी छावनी थी। गोरे सिपाहियों की बारक के सामने ही एक लम्बा-चौड़ा मैदान था, जिसके चारों ओर सड़क बनाई गई थी। सरकारी कचहरी इस गोरा—बारक के पीछे बनी हुई थी। कचहरी के लिये जाने वालों को इस मैदान का चक्कर काट कर जाना पड़ता, जिसमें काफी समय लगता था। मैदान के बीच में होकर भी एक पगडण्डी कचहरी तक गई थी, जिससे जल्दी ही वहाँ पहुँचा जा सकता था। पर गोरे सिपाही भारतवासियों का इस रास्ते निकलना पसन्द नहीं करते थे, इसलिये जब वे किसी को इस पर चलता देख लेते तो उसे रोक कर परेशान करते थे।

बंकिम बाबू हमेशा पालकी गाड़ी में बैठ कर इसी पगडण्डी से कचहरी आया-जाया करते थे। उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी होने के कारण कोई उनको रोकता न था। एक दिन जब कचहरी से लौटते हुये उनकी पालकी मैदान के बीच में पहुँची तो एक गोरे ने उसके दर्वाजे पर जोर से धक्का मारा। कहारों ने भयभीत होकर पालकी को जमीन पर रख दिया। बंकिम बाबू जब बाहर निकले तो उन्होंने देखा कि एक लम्बा-तड़ंगा अँगरेज सामने खड़ा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है । उसकी उद्दण्डता देखकर बंकिम बाबू बड़े क्रोधित हुए और गरज कर बोले—"शैतान, तू कौन है ?"

उस हट्टे-कट्टे अँगरेज ने इनकी बात का कुछ उत्तर न देकर जोर से इनका हाथ पकड़ा और उसे मरोड़ कर दूसरी तरफ ढकेल दिया । जिससे यह पगडण्डी से कुछ दूर चले गये । अँगरेज के इस असभ्यतापूर्ण व्यवहार से, और यह देख कर कि वह एक सम्माननीय भारतवासी को जातीयता के अभिमान के कारण तुच्छ समझता है, बंकिम बाबू का क्रोध और भी भड़क उठा । शारीरिक शक्ति की निगाह से वे उस फौजी का कुछ नहीं कर सकते थे, इसलिये थोड़ी ही दूरी पर गेंद खेलते हुए अन्य अँगरेज के पास गये । उनमें एक बहरामपुर के जज मिस्टर वेंब्रिज भी थे । बंकिम बाबू ने उन्हीं से कहा—"महोदय ! क्या आपने देखा कि उस व्यक्ति ने अभी मेरे साथ कैसा व्यवहार किया है ?"

जज साहब ने कहा—"महाशय ! मैं दूर की चीजों को नहीं देख सकता । मेरी दृष्टि शक्ति कमजोर है, इसलिये मैंने कुछ नहीं देखा ।" इसके पश्चात् बंकिम बाबू ने अन्य अँगरेजों से भी वही बात कही, पर सबने यही उत्तर दिया कि "हमने कुछ नहीं देखा ।"

साहब की उद्दण्डता का प्रतिफल देने के लिये बंकिम बाबू ने उसी समय उस पर मुकदमा चलाने का निश्चय कर लिया था और इसके लिये गवाह तैयार कर लेना चाहते थे । पर इन लोगों में से कोई गवाही के लिये तैयार नहीं हुआ । मिस्टर वेंब्रिज (जज) तो वास्तव में कम देखते थे, पर अन्य अँगरेजों के सम्बन्ध में ऐसी बात नहीं थी । वे अपने सजातीय के विरुद्ध एक भारतवासी का पक्ष ग्रहण करने को तैयार कैसे होते ? पर यह सब देख कर बंकिम बाबू ने साहस न छोड़ा और अँगरेजों को सावधान करते हुए कहा—"अच्छा आप लोग ऐसा ही अदालत में कहियेगा ।"

वह अँगरेज भी कोई साधारण सिपाही न था, उस छावनी का प्रधान अध्यक्ष कर्नल डफिन था । उसकी सभी अँगरेज अधिकारियों से मित्रता थी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और सब लोग उसका रौबदाब भी मानते थे। सब बातें मालूम करके बंकिम बाबू अपने घर चल दिये, पर क्रोध के कारण उनका चेहरा अब भी लाल हो रहा था।

दूसरे ही दिन बंकिम बाबू ने उन्हीं जज साहब (मिस्टर वेंब्रिज) की इजलास में कर्नल डफिन पर दावा कर दिया। जब कर्नल साहब के नाम सम्मन निकला तो तमाम अँगरेजों में हलचल मच गई। पर अभी कर्नल डफिन को होश नहीं आया था। वह कहने लगा—"काले आदमी का यह साहस कि वह मेरे ऊपर नालिश करे ! मैं उसे दिखा दूँगा कि किसी अँगरेज पर नालिश करना और उसमें सफल हो सकना सहज नहीं है।"

अन्य कितने ही अँगरेज भी एक योरोपियन की इज्जत इस प्रकार बिगड़ती देखकर उसकी सहायता को तैयार हो गये और बंकिम बाबू पर दबाव डालने लगे। जब इसमें सफलता न मिली तो उन्होंने बंकिम बाबू के विरुद्ध संगठित होकर कार्य करने का निश्चय किया।

पेशी के दिन कर्नल साहब को अदालत में हाजिर होना पड़ा। उस दिन वहाँ नागरिकों की बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। हिन्दुस्तानी लोग आश्चर्य कर रहे थे कि इतने बड़े अँगरेज अफसर पर दावा करने का साहस किसने किया ? बंकिम बाबू कौन हैं ? जज साहब कहाँ हैं ? कर्नल साहब कहाँ हैं ? कोई कहते थे—"अँगरेज-अँगरेज आपस में मिल जायेंगे और अन्त में बंकिम बाबू को हारना ही पड़ेगा।" दूसरे की सम्मति थी—"नहीं—नहीं—वेंब्रिज साहब बड़े ईमानदार हैं—न्यायमूर्ति हैं। वे कानून के विरुद्ध कभी सजातीय का पक्ष नहीं ले सकते।"

पर अब एक नई ही समस्या पैदा हो गई। शहर के सभी वकील और मुख्तार भी इस मुकदमे को देखने जज साहब के इजलास में इकट्ठे हो गये थे, और वे सब बंकिम बाबू के पक्ष में थे ! इसलिये जब कर्नल साहब वकील करने गये तो उनको एक भी वकील अपने मुकदमे की पैरवी करने को न मिला। फिर वे मुख्तारों के पास गये तो वहाँ भी सबने यही उत्तर दिया कि "हमने बंकिम बाबू के वकालत नामे पर हस्ताक्षर कर दिये है !"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह दशा देखकर साहब का नशा उतरा ! अब वे कमिश्नर आदि बड़े अफसरों के पास दौड़े, पर उन्होंने अपने पद के कारण इसमें हस्तक्षेप करना उचित न समझा। अन्त में सब लोग जज साहब की ही शरण में गये। पर मिस्टर वेंब्रिज निस्सन्देह बड़े न्यायप्रिय निकले। उन्होंने मित्रों की खातिर भी अन्याय करना स्वीकार नहीं किया और स्पष्ट कह दिया—"जब तक कर्नल साहब बंकिम बाबू से क्षमा प्रार्थना न करेंगे तब तक मैं इन्हें छोड़ नहीं सकता।"

अन्त में कर्नल साहब को अपनी शान छोड़कर 'काले आदमी' से क्षमा माँगनी ही पड़ी। बंकिम बाबू ने भारतीयता के गौरव की रक्षार्थ जो साहस दिखाया उसका अन्य लोगों पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा और वे अँगरेजों के मुकाबले में अपनी हीनता की वृत्ति को त्यागने लगे।

बंकिम चन्द्र का जन्म (सन् १८३८ से १८९४) एक उच्च ब्राह्मण परिवार में कलकत्ता के निकट कौंटाल पाड़ा' ग्राम में हुआ था। उनके पिता श्री यादव चन्द्र चट्टोपाध्याय भी डिप्टी कलेक्टर थे और अपने समय के एक बड़े तेजस्वी अधिकारी माने जाते थे। वे बङ्गाल के मिदनापुर जिले में काम करते थे, इसलिये बंकिम बाबू की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा वहीं पर हुई। आरम्भ में इनका मन अँगरेजी पढ़ने में नहीं लगता था, पर एक दिन अध्यापक ने जब इनको इसके लिये डाँटा तो अपनी उदासीनता त्याग कर शीघ्र ही उसमें अच्छी प्रगति करके दिखा दी। यह बाल्यावस्था में ज्यादा खेल-कूद भी पसन्द नहीं करते इसलिये शारीरिक दृष्टि से ये कभी अधिक शक्तिशाली न हो सके। वैसे संयम-नियम से रहने के कारण स्वास्थ्य साधारतः ठीक ही रहता था।

बंकिम बाबू आरम्भ से ही एक मेधावी और परिश्रमी विद्यार्थी थे, इसलिये इन्होंने पढ़ाई में शीघ्र ही अच्छी उन्नति कर ली। उस समय तक ऐंट्रेंस, एफ० ए०, बी० ए० आदि परीक्षायें आरम्भ नहीं हुई थीं। केवल 'जूनियर 'सीनियर' नाम की परीक्षायें होती थीं। सन् १८५८ में जब बंकिम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाबू कालेज की पढ़ाई समाप्त कर चुके तो उसी वर्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय का कार्यारम्भ हुआ और घोषणा की गई कि ५ अप्रैल को बी० ए० की परीक्षा ली जायगी । उस समय केवल दो-तीन महीने का समय शेष था। इसलिये केवल १३ विद्यार्थी परीक्षा में बैठने को तैयार हुए। इनमें ग्यारह अनुत्तीर्ण हो गये। केवल दो पास हुये जिनमें बंकिम बाबू का नम्बर पहला था।

पितृभक्ति का अपूर्व उदाहरण—

उस युग में बी० ए० पास कर लेना बहुत बड़ी योग्यता का प्रमाण माना जाता था। इसलिये जब यह समाचार गजट में छपा तो बङ्गाल के छोटे लाट हालिडे साहब ने बंकिम बाबू को बुलवाया और इस सफलता पर बधाई दी। तत्पश्चात् इनसे डिप्टी मैजिस्ट्रेट के पद पर काम करने को कहा, जो उस समय भारतवासियों के लिए बहुत बड़ा पद समझा जाता था। बंकिम बाबू ने इसे सुन कर गम्भीरतापूर्वक कहा—'मैं इस कृपा के लिये बहुत कृतज्ञ हूँ। परन्तु अभी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकता। मैं इस सम्बन्ध में पहले अपने पिताजी से पूछ लेना चाहता हूँ। वे जैसा कहेंगे वैसा ही करूंगा।"

लाट साहब ने बड़े आश्चर्य से कहा—"क्या डिप्टी मैजिस्ट्रेट से बढ़ कर आप किसी अन्य नौकरी की आशा रखते हैं ? यदि नहीं, तो आप इसे स्वीकार क्यों नहीं करते ?"

बंकिम बाबू—"आपका कथन ठीक है। पर मैं पिताजी की आज्ञा लिये बिना कोई काम नहीं करता। इसीलिये तुरन्त ही स्वीकृति देने में असमर्थ हूँ।"

तब लाट साहब ने कहा—ठीक है, अपने पिता की आज्ञा ले लो। परन्तु शीघ्र उत्तर देना।

बंकिम बाबू के पिता यह समाचार सुन कर बहुत प्रसन्न हुये और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनकी आज्ञा प्राप्त करके अगस्त १८५८ में ही वे इस पद पर काम करने लग गये। उनकी पितृ-भक्ति देखकर लाट साहब भी बड़े प्रभावित हुये।

साहित्य-सेवा का व्रत—

जिस समय बंकिम बाबू विद्यालय की शिक्षा समाप्त करके सरकारी नौकरी में प्रविष्ट हुये, उस समय देश की दशा बड़ी अस्थिर थी। सन् १८५७ के गदर के फलस्वरूप देश की शासन-प्रणाली बदल गई थी और ईस्ट इण्डिया कम्पनी को हटाकर समस्त शासन-भार महारानी विक्टोरिया ने अपने हाथ में ले लिया था। वे एक बड़ी सुयोग्य और सहृदय शासक थीं और भारत वर्ष को आधुनिक प्रगति के मार्ग पर चलाना चाहती थीं। इसलिये यहाँ शीघ्रतापूर्वक शिक्षा का प्रचार किया जा रहा था, प्रेस खोले जा रहे थे और समाचार पत्रों का प्रकाशन बढ़ने लगा था। इस प्रकार देश में एक सार्वजनिक जागृति का श्रीगणेश हुआ था और देश के कितने ही प्रबुद्ध व्यक्ति उसका लाभ उठाकर सामाजिक और व्यक्तिगत उत्थान के कार्यक्रमों में संलग्न होने लगे थे।

इस अवसर पर बंकिम बाबू ने अनुभव किया कि सरकारी नौकरी होने के कारण वे किसी सार्वजनिक आन्दोलन में तो प्रत्यक्ष भाग ले नहीं सकते, इसलिये प्रेरणादायक सत्साहित्य की रचना करके ही जन-जागृति के उद्देश्य की पूर्ति की जाय।

उस समय बँगला भाषा की दशा बहुत हीन थी। हिन्दी की तरह ही उसमें कुछ भक्ति और शृङ्गार सम्बन्धी कविता—पुस्तकों को छोड़कर कोई उत्तम साहित्य नहीं था। गद्य साहित्य का तो तब तक ठीक तरह से आरम्भ भी नहीं हुआ था। उस समय की स्थिति का वर्णन करते हुए महाकवि रवीन्द्र नाथ ने एक लेख में कहा था—

"उस समय बंग भाषा को कोई श्रद्धा के साथ नहीं देखता था। संस्कृत के पण्डित उसे ग्राम्य-भाषा कहते थे अँगरेजी पढ़े-लिखे उसको 'मूर्खों' की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाषा मानते थे। बँगला भाषा में ग्रन्थ-रचना करके यश प्राप्त करने की संभावना पर कोई स्वप्न में भी विश्वास नहीं करता था। केवल स्त्रियों और बालकों के लिये उसमें छोटी-छोटी पुस्तकें प्रकाशित की जाती थीं। असम्मानित बँगला भाषा उस समय अत्यन्त हीन और मलिन वेष में कालयापन करती थी। उसमें जो सौन्दर्य और महत्त्वपूर्ण गुण छिपे हैं, वे दरिद्रता के आवरण को भेद कर प्रकट नहीं हो पाते थे।"

बंकिम बाबू के समय में बँगला भाषा की ऐसी ही अवस्था थी। बहुत थोड़े व्यक्ति जो उससे अनुराग रखते थे वे किसी प्रकार उसकी सेवा किये जा रहे थे। नहीं तो सब कोई अँगरेजी के पीछे पागल थे। स्वयं बंकिम चन्द्र ने आरम्भ में उसी में लिखने का विचार किया और "राजमोन्स वाइफ" (राजमोहन की पत्नी) नामक एक उपन्यास भी लिख डाला। पर शीघ्र ही उनका यह भ्रम दूर हो गया। उन्होंने समझ लिया कि अपनी भाषा को हीनावस्था में छोड़ कर अँगरेजी के पीछे दौड़ना एक प्रकार का अपराध है। उसमें तो पहले ही एक से एक धुरन्धर लेखक मौजूद हैं। आवश्यकता तो इस बात की है कि अपनी शक्ति का उपयोग मातृभाषा के लिये करके उसे सभ्य-भाषाओं की पंक्ति में खड़े होने योग्य बनाया जाय। तब से वे मातृभाषा के इतने अनुयायी बन गये कि अपना समस्त निजी कार्य बँगला में ही करने लगे। एक बार उन्होंने अपने घनिष्ट मित्र के पत्र का उत्तर इसीलिये नहीं दिया कि वह अँगरेजी में था। उन्होंने अपने उस मित्र से एक ही प्रश्न किया कि "जब अँगरेजी न तो तुम्हारी मातृ-भाषा है और न मेरी, तब उसमें पत्र लिखने की क्या आवश्यकता है ?"

यही कारण है कि आज बंकिम चन्द्र को बँगला भाषा की प्राणप्रतिष्ठा करने वाला माना जाता है। इस दृष्टि से वहाँ के साहित्यकारों में उनका वैसा ही महत्त्व माना जाता है जैसा कि हिन्दी वालों में भारतेन्दु बा० हरिश्चन्द्र का। इन्होंने भी हिन्दी के गद्य-साहित्य का निर्माण और प्रचार करने में अपनी पूरी शक्ति लगादी थी और स्वयं ही नहीं अनेक विद्वानों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रेरणा और प्रोत्साहन देकर हिन्दी की जड़ जमाई थी। बंकिम बाबू भी सरकारी नौकरी का कार्य पूरा करके घर आने पर सिवाय साहित्य-सेवा और उसी का प्रचार करने के और किसी तरफ ध्यान नहीं देते थे। वे अन्य प्रतिभाशाली व्यक्तियों को प्रेरणा देकर भी बँगला-साहित्य की वृद्धि का प्रयत्न करते थे।

यह प्रसिद्ध है कि बङ्गाल के विद्वान् और देशभक्त श्री रमेश चन्द्र दत्त को उन्होंने बङ्गसाहित्य की सेवा में लगाया था। दत्त महाशय अँगरेजी शासन में उन पाँच भारतवासियों में से थे जिन्होंने सबसे पहले बिलायत की आई० सी० एस० परीक्षा पास करके उच्च पद प्राप्त किया था। साथ ही वे भारतीय संस्कृति के भी इतने बड़े विद्वान् थे कि उनका लिखा "ऐंशियेण्ट हिस्टरी आफ इण्डियन सिविलिजेशन" (भारत की प्राचीन सभ्यता का इतिहास) अभी तक एक सम्माननीय ग्रन्थ माना जाता है और विश्व विद्यालयों के पाठ्यक्रम में स्थान पाता है। जब बंकिम बाबू ने रमेश चन्द्र दत्त से भेंट होने पर अनुरोध किया कि अँगरेजी में लिखने के साथ मातृ-भाषा में भी कुछ लिखने की कृपा किया करें, तो उन्होंने उत्तर दिया "बँगला भाषा में कैसे लिखें? उसमें तो लिखने की कोई निश्चित शैली ही नहीं है।" बंकिम बाबू ने कहा—"अभी निश्चित शैली नहीं है तो कोई बात नहीं, आप जैसे विद्वान् जिस प्रकार लिखेंगे वही शैली बन जायगी।' इस बात से प्रभावित होकर रमेश चन्द्र ने बँगला में कई पुस्तकें लिखीं जो अभी तक लोक प्रिय बनी हुई हैं।

बंकिम चन्द्र और रवीन्द्र नाथ—

महाकवि रवीन्द्र नाथ को महान् साहित्यकार बनाने में बंकिम बाबू का भी पर्याप्त सहयोग था। वे अपने मासिक पत्र 'बंग-दर्शन' में उनकी रचनाओं को स्थान देकर, उनकी आलोचना करके उन्हें प्रोत्साहित करते थे। कहा जाता है कि एक विवाह के उत्सव में बंकिम और रवीन्द्र दोनों उपस्थित थे। उस समय उनकी आयु पचास के लगभग थी और वे बंग-साहित्य के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्राट माने जाते थे। लोगों ने स्वागत-सत्कार करके उनको फूल-मालाओं से लाद दिया, पर उन्होंने वे अपने हाथ से रवीन्द्रनाथ को पहिना दीं। रवीन्द्र भी उनको अपना गुरु मानते थे। उन्होंने लिखा है—'बंकिम बँगला लेखकों के गुरु और बङ्गाली पाठकों के मित्र हैं। वे 'सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलां' बङ्ग-भूमि की मातृवत्सल सन्तान हैं।" बंकिम बाबू का देहान्त होने पर उन्होंने साधना' (मासिक पत्र) में लिखा था—

जिस दिन से बंकिम बाबू ने समालोचना करना छोड़ दिया, उस दिन से बँगला में कोई अच्छा समालोचक पैदा नहीं हुआ। बङ्किम बाबू का स्थान इस दृष्टि से आज तक खाली ही है। अभी तक उसका कोई अधिकारी सम्मुख नहीं आ सका। उनकी समालोचनायें बँगला-साहित्य में अराजकता नहीं फैलने देती थीं। वे साहित्य जगत् के राजा थे। जो लोग बङ्किम बाबू और आजकल की समालोचनाओं के बारे में सोचेंगे वे इस बात को मुक्त कण्ठ से स्वीकार करेंगे कि वैसा समालोचक आज तक पैदा नहीं हुआ। आज हमारे साहित्य—सिंहासन से राजा के उठ जाने से साहित्य-क्षेत्र में गड़बड़ी फैली हुई है।"

जो लोग हमारे कितने ही हिन्दी-पाठकों की तरह समालोचना' का अर्थ केवल 'पुस्तक-परिचय' समझते हैं, वे गलती करते हैं। समालोचक का वास्तविक कर्त्तव्य एक चतुर माली की तरह 'साहित्य-वाटिका' की देख-भाल करना है कि उसमें किसी तरह के अनुपयोगी झाड़-झंकाड़ न उग आवें और न किसी प्रकार का कूड़ा-कचड़ा फैलने पावे। यह कार्य निस्सन्देह बड़ा कठिन है और इसीलिये अनेक विद्वान् इस क्षेत्र में पैर रखते हुए डरा करते हैं। प्रथम तो निष्पक्ष और खरी समालोचना करना ही सहज नहीं है, क्योंकि उसके लिये पर्याप्त अध्ययन और परिश्रम की आवश्यकता होती है। फिर उससे भी बड़ी विपत्ति यह है कि जिस किसी की रचना के सम्बन्ध में खरी बातें कही जायेंगी, उसकी त्रुटियाँ दिखाई जायेंगी, वही नाराज होकर विरोधी बन बैठेगा। बङ्किम बाबू के साथ ऐसा ही हुआ। इसकी चर्चा करते हुए रवीन्द्र नाथ ने कहा था—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बङ्किम बाबू से कुछ लोग रुष्ट रहा करते थे और व्यर्थ में उनकी निन्दा किया करते थे। जो लोग दूसरों की नकल करके ही लेखक बन जाना चाहते थे, बङ्किम बाबू उनकी खूब धज्जियाँ उड़ाते थे। इसीलिये अनेक लोग उनसे चिढ़ा करते थे। उनमें से कई तो उनको 'बहुत छोटा लेखक' सिद्ध करने का प्रयत्न करते थे! परन्तु इन बातों के होते हुए भी वे कभी समालोचक के कर्त्तव्य से विमुख नहीं हुए। उनकी आलोचनायें कभी-कभी अधिक कड़ी अवश्य होती थीं, परन्तु वे सत्य-पथ से कभी विचलित न होते थे। इन कड़ी समालोचनाओं के कारण कई बार उन्हें गालियाँ भी खानी पड़ती थीं।"

हम बङ्किम चन्द्र जैसे साहित्यकारों को केवल 'लेखक' ही नहीं वरन् उससे बहुत ऊँचा समझते है। मनोविनोद, ज्ञान-चर्चा अथवा अर्थोपार्जन के लिये पुस्तक लिखना और बात है, तथा समाज एवं देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उनके उत्थान और नव-निर्माण के उपयुक्त साहित्य तैयार करना और दूसरों से कराना सर्वथा भिन्न बात है। पेशे के रूप में पुस्तकें लिखने वाले लेखक बहुत से मिल सकते हैं पर अपने हानि-लाभ, यश-अपयश का विचार छोड़ कर समाज को ऊँचा उठाने वाले साहित्यकार विरले ही निकलते हैं। ऐसे साहित्यकार समाज के नेता और मार्ग दर्शक होते हैं और उनका यश अनेक राजनैतिक नेताओं की अपेक्षा चिरस्थायी होता है। बङ्किम बाबू इसी श्रेणी के सच्चे और सेवाभावी साहित्यिक थे।

'बंग-दर्शन का प्रकाशन—

साहित्य-प्रचार और नये लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिये बङ्किम बाबू ने 'बङ्ग-दर्शन' मासिक पत्र भी प्रकाशित किया। किसी अच्छे पत्र-पत्रिका का सफलतापूर्वक चला सकना वर्तमान समय में भी एक कठिन कार्य है, तो जिस समय छापेखाने शुरू ही हुए थे और अधिकांश पढ़े-लिखे लोग भी यह नहीं जानते थे कि 'अखबार' या सामयिक पत्र' किस को कहते हैं, उस समय एक अच्छा 'पत्र' प्रकाशित करना और उसका सफलता पूर्वक सञ्चालन करना कितना कठिन होगा इसे अनुभवी व्यक्ति ही समझ सकते हैं। फिर बङ्किम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाबू एक उच्च पदस्थ राजकर्मचारी थे और इस प्रकार के 'सार्वजनिक कार्यों' में हाथ डालना उनके लिये 'लाभदायक' नहीं था। जानकार लोगों का कहना है कि देश और समाज की सेवा के कार्यों में इस प्रकार अधिक ध्यान देने से उस समय की सरकार उनसे कुछ असन्तुष्ट ही रहती थी, और इसीलिये वे जीवन के अन्त तक 'डिप्टी मैजिस्ट्रेट' ही बने रहे। यदि वे अन्य सब सरकारी कर्मचारियों की तरह अपना लक्ष्य एक मात्र 'नौकरी' को ही रखते तो अवश्य ही कमिश्नर या उससे भी बड़े पद पर पहुँच सकते थे।

कुछ भी हो बङ्ग-दर्शन' अपने समय का एक प्रतिनिधि मासिक पत्र था। यदि यह कहा जाय कि उसने ही लोगों को पत्र-पत्रिकाओं में लिखने और उनको चलाने की शिक्षा दी तो इसमें कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है। उसके सम्बन्ध में "भारत के गौरव" नामक ग्रन्थ में कहा गया है—

" 'बङ्ग दर्शन' उस समय एक मात्र साहित्यिक पत्र था और वह भी मामूली ढङ्ग का नहीं था। उसके सम्पादक थे स्वयं बङ्किम। उसमें अच्छे से अच्छे लिखने वालों के लेख रहते थे, और उसका सबसे बड़ा आकर्षण था बङ्किम की अपनी रचनाएँ। उसमें उपन्यास, साहित्य, समालोचना और विभिन्न प्रकार के लेख-निबन्ध आदि प्रकाशित होते थे। लोग 'बङ्ग-दर्शन' की राह देखा करते थे और जैसे ही वह आता, वैसे ही पढ़ डालते थे। उसकी आलोचना, व्याख्या तथा सामूहिक पाठ हुआ करता था। लोग बङ्किम की रचनाओं की पंक्तियाँ याद कर लेते थे। बङ्किम चन्द्र उस युग में कितने प्रसिद्ध हो गये थे, इसका कुछ पता इस बात से लग सकता है कि उनके उपन्यासों, निबन्धों के कुछ अंश याद कर लेना और समय आने पर उनको सुना सकना एक प्रशंसनीय बात मानी जाती थी। जो लोग उनकी भाषा-शैली का प्रयोग अपनी रचनाओं में या पत्रों में कर सकते थे उनको विद्वान्, बुद्धिमान माना जाता था। आधुनिक बङ्ग-साहित्य के जनक बङ्किम चन्द्र ही थे। उनके पहले राजा राममोहनराय और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने बँगला-गद्य को सँवारा था। बङ्किम ने आकर उसे और हरा-भरा तथा सुन्दर बना दिया। उन्होंने बङ्गाल के घर-घर में साहित्य का सन्देश पहुँचाया।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बङ्किम बाबू ने इस पत्र को न तो नाम कमाने के लिये निकाला था और न धन कमाने के लिये। उस समय पत्र-पत्रिका निकाल कर इस प्रकार का लाभ उठा सकना सम्भव ही न था, क्योंकि उनके ग्राहक बहुत कम होते थे। हमारे हिन्दी साहित्य के अग्रगामी मासिक पत्र 'हिन्दी प्रदीप' 'ब्राह्मण' आदि के इतिहास से हमको विदित है कि उनकी ग्राहक संख्या कभी दो-चार सौ से ज्यादा नहीं हो सकी और उनको सदा घाटे का ही रोना रहता था। ऐसी दशा में 'बङ्ग-दर्शन' का उद्देश्य भी सिवाय देश सेवा और समाज-सेवा के और कुछ नहीं हो सकता था।

बंकिम बाबू की रचनाएँ—

बङ्किम बाबू साहित्य-संसार में विशेष रूप से एक 'उपन्यासकार' की हैसियत से प्रसिद्ध हुए हैं। उनके पहले बँगला भाषा में या तो उपन्यास थे ही नहीं, और यदि दस-पाँच थे भी तो वे बाजारू किस्से-कहानियों की तरह थे। एक लेखक ने बतलाया है कि "सबसे पहले बङ्किम बाबू ने ही बँगला-साहित्य में सुरुचि उत्पन्न की। उसके पहले गाली-गलौज का बाजार खूब गर्म हो जाता था, भ्रष्ट कहानियाँ निकलती थीं और निन्दा तथा अपमान जनक हास्य का बोलबाला था।" बङ्किम बाबू ने विदेशों के श्रेष्ठ साहित्य का अनुशीलन कर अपने देश की आवश्यकता और रुचि के अनुसार उच्चकोटि की पुस्तकें लिखीं। उनसे एक तरफ जन-मानस का परिष्कार हुआ और दूसरी ओर अन्य लेखकों को एक आदर्श प्राप्त हुआ।

बङ्किम बाबू का पहला उपन्यास 'दुर्गेश नन्दिनी' है जिसमें अकबर के युग की सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थिति पर प्रकाश डाला गया है। इसकी भाषा में संस्कृत शब्दों की अधिकता है। पर जैसे-जैसे वे आगे लिखते गये उनकी भाषा सरल और स्वाभाविक होती गई, जिससे सामान्य पाठकों में उनका प्रचार सम्भव हो सका।

दूसरा उपन्यास 'कपाल कुण्डला' सामाजिक कहा जा सकता है। यह है तो पूर्ण रूप से काल्पनिक पर इसका आधार बङ्किम बाबू के एक व्यक्तिगत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुभव पर है। जिस समय वे नगवा (मदिनीपुर) में काम करते थे, एक रात को एक कापालिक ने उनके दरवाजे पर जोर से धक्का मारा। जब नौकरों के सूचना देने पर वे बाहर आये तो देखा कि एक लम्बा-चौड़ा मनुष्य दरवाजे पर खड़ा है। उसका चौड़ा मस्तक प्रकाशमान था। उसके हाथ में मनुष्य की खोपड़ी थी, गले में रुद्राक्ष की माला थी और एक नरमुण्ड भी था। उसकी दाढ़ी और मूँछ बहुत बड़ी थीं। उसने बाघम्बर पहिन रखा था, माथे पर कोयले का टीका और शरीर भर में भस्म लगी हुई थी। उसे देखते ही बङ्किम बाबू समझ गये कि यह कोई कापालिक है। उन्होंने आश्चर्य के साथ पूछा—"यहाँ आधी रात को क्यों आये हो ?"

कापालिक ने उनके प्रश्न का कुछ उत्तर न देकर कहा—"मेरे साथ चलो।"

बङ्किम बाबू—कहाँ ?

कापालिक—बालियाड़ी में समुद्र किनारे।

बङ्किम बाबू—नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता।

इस पर वह बिना कुछ कहे चला गया। दूसरे दिन भी इसी प्रकार वह आधी रात के समय आया और वे ही बातें दुहराईं। तीसरे दिन भी उसने ऐसा ही किया। इसके बाद फिर वह कापालिक कभी नहीं आया, इसके पश्चात् एक दिन बङ्किम बाबू ने बलियाड़ी जाकर उस स्थान को अच्छी तरह देखाभाला था। 'कपाल कुण्डला' उपन्यास में उन्होंने जो कापालिक के निवास स्थान का वर्णन किया है वह बलियाड़ी से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।

'आनन्दमठ' की रचना—

बङ्किम बाबू ने इसके पश्चात् 'मृणालिनी' 'विषवृक्ष' 'चन्द्र शेखर' 'इन्दिरा' राजसिंह' आदि कितने ही उपन्यास लिखे जिनमें से कई कला की दृष्टि से भी इतने बढ़िया माने गये कि इङ्गलैण्ड में उनका अनुवाद अँगरेजी भाषा में प्रकाशित किया गया। पर जिस उपन्यास के कारण उनका नाम देशभक्तों में अमर हो गया है, वह है, उनका 'आनन्दमठ'। यह अन्य रचनाओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की अपेक्षा छोटा है और इसमें कला का परिचय भी कम मिलता है। पर इसमें देशभक्ति का एक ऐसा आदर्श उपस्थित किया गया है, जिसने सन् १९०५ से आरम्भ होने वाले राजनैतिक आन्दोलन में हजारों व्यक्तियों को पक्का देश भक्त और स्वाधीनता-संग्राम का निर्भीक सैनिक बना दिया। इसी उपन्यास में सबसे पहले 'वन्दे मातरम्' का शब्द और उसका गीत लिखा गया है, जो आज देश में 'राष्ट्रीय-गान' की तरह प्रचलित है। इस उपन्यास की प्रशंसा करते हुए 'भारत के गौरव' पुस्तक में कहा गया है—

"बङ्किम का 'आनन्दमठ' उपन्यास जैसे एक नया राग सुनाने के लिये ही लिखा गया था। इस उपन्यास को सामाजिक भी कहा जा सकता है और एक हद तक ऐतिहासिक भी। पर इसका असली उद्देश्य कहानी की आड़ में लोगों को देशभक्ति का पाठ सिखाना था। विदेशी शासन से देश को मुक्त करने की जो भावना हमारे देशवासियों के हृदय में जगी, वह अँगरेजी पढ़ने या योरोप का इतिहास जान लेने से नहीं, वरन् अँगरेजों के शासन में किये गये भारतीयों के अपमान और अत्याचार से ही उत्पन्न हुई थी। बङ्किम बाबू का यह उपन्यास उसी भावना का उद्गार है। लगभग काल्पनिक इतिहास को साकार बनाकर बङ्किम ने देश के सामने एक महान्, आदर्श खड़ा कर दिया। इस उपन्यास में एक मठ के संन्यासियों ने देश की रक्षा के लिये शत्रुओं से लड़ाई की और इसी आदर्श के लिये अपना प्राण होम दिया। इन साधुओं का मन्त्र था 'वन्दे मातरम्'।

" 'आनन्द मठ' ही एक ऐसा उपन्यास है जिसने सबसे पहले राजनीतिक विद्रोह की कहानी सुनाई। नवयुवकों के सामने विदेशी राज्यशक्ति के विरुद्ध खड़े होने का एक आदर्श प्रस्तुत किया। 'आनन्दमठ' का 'प्लाट' बहुत कुछ काल्पनिक है, पर उसके द्वारा भारतीय जनता के सामने स्वाधीनता की लड़ाई का एक इतिहास आया। इस उपन्यास की आड़ में भारतीयों के सामने स्वतन्त्रता के युद्ध का एक आदर्श रख दिया गया, उसका उपाय या साधन बताया गया और साथ ही एक मन्त्र दिया गया। उस जमाने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिये यही बहुत था। इस उपन्यास के कारण बङ्किम की नौकरी जाते-जाते रह गई।"

'आनन्दमठ' यद्यपि एक मनोरञ्जक शैली पर लिखा उपन्यास ही है पर उसमें आदि से अन्त तक देश-प्रेम की भावना भरी हुई है। जगह-जगह वार्तालाप के द्वारा समाज-सेवा की प्रेरणा दी गई है। मठ का एक संन्यासी—भवानन्द, महेन्द्रसिंह नाम के बड़े जमींदार को देश-सेवा के लिये प्रेरणा देता हुआ कहता है—

"महेन्द्र सिंह, मेरी धारणा थी कि तुममें कुछ वास्तविक मनुष्यत्व होगा, पर अब देखता हूँ कि सब जैसे हैं, वैसे ही तुम भी हो। तुम भी जमीदारों के लड़कों की तरह केवल घी-दूध खाने में ही बहादुर हो! देखो, साँप जमीन पर छाती के बल रेंगता है, उससे ज्यादा नीच जीव दूसरा कौन होगा? पर उस पर पैर पड़ जाने से वह भी फन उठाकर काटने को दौड़ता है। क्या तुमको किसी तरह धर्म और देश की दुर्दशा दिखाई नहीं पड़ती। तनिक मगध, मिथिला, कांची, काशी, दिल्ली, काश्मीर—किसी भी स्थान को देखो, सर्वत्र दुर्दशा ही जान पड़ेगी। और किस अन्य देश के आदमी खाने के अभाव में घास, पत्तियाँ, लता, झाड़ी आदि को खाते है? किस देश के आदमी सियार, कुत्ता, मुर्दा तक खाते हैं? किस देश के आदमियों को घर में रुपया रहने से सुरक्षा का भरोसा नहीं; देव, धर्म की आराधना की सुविधा नहीं, घर में लड़की-बहू की लज्जा का ठिकाना नहीं? सब देशों में राजा—प्रजा में पारस्परिक सम्बन्ध के कुछ नियम प्रचलित हैं। पर हमारे मुसलमान राजा कहाँ रक्षा करते हैं? धर्म गया, जाति गई, मान गया, अब तो प्राण भी जा रहे हैं। इन नालायक मुसलमानों को भगाये बिना क्या हिन्दुओं का हिन्दुत्व कायम रह सकेगा?"

जिस 'संन्यासी-विद्रोह' की घटनाओं को लेकर 'आनन्दमठ' उपन्यास लिखा गया है वह उस समय हुआ था जब सन् १७५७ का पलासी युद्ध होकर बङ्गाल में से नबाबी शासन निर्बल पड़ गया था और अँगरेजी राज्य की जड़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्रमशः जमती जाती थी। पर कुछ स्थानों में मुसलमानों और अँगरेजों का मिला-जुला शासन चल रहा था, उसी अवसर पर बङ्गाल के मेदिनीपुर आदि स्थानों में संन्यासियों के एक संगठन का प्रादुर्भाव हुआ था जो अस्त्र-शस्त्र रखते थे और गाँव वालों से खाद्य सामग्री तथा धन वसूल करके अपना काम चलाते थे। इस कारण कभी-कभी राजकर्मचारियों से उनकी मुठभेड़ भी हो जाती थी जिसमें दोनों पक्षों के लोग हताहत होते थे। जब यह समाचार उस समय के गवर्नर जनरल वारेन हैस्टिंग्स को मिला तो उसने कुछ अँगरेजी सेना संन्यासियों को दबाने को भेजी। एकाधबार संन्यासियों को कुछ सफलता मिल गई पर शीघ्र ही उनका दल तितर-बितर होकर खत्म हो गया।

इसी 'संन्यासी-विद्रोह' की घटना में कल्पना का पुट देकर बङ्किम बाबू ने एक देशभक्ति पूर्ण कथा की सृष्टि की है। यद्यपि उस समय देश में नाम मात्र को मुसलमानी शासन भी था, पर असली कर्ता—धर्ता अँगरेज ही थे। इसलिये संन्यासियों का वास्तविक संघर्ष अँगरेज सरकार की सेना से ही होना था और उन्हीं के द्वारा संन्यासियों के सङ्गठन का अन्त हो सका। पर यदि बङ्किम बाबू अपने उपन्यास में मुसलमानों को विपक्षी न बतलाते तो वे बहुत शीघ्र अँगरेज सरकार के विरोधी सिद्ध किये जा सकते थे। इसलिये उन्होंने आरम्भिक मुठभेड़ मुसलमानी नबाव से वर्णन की है और अँगरेजों को उसके सहायक के रूप में ही प्रकट किया है।

इतना ही नहीं ग्रन्थ के अन्त में उन्होंने 'अँगरेजी राज्य' की स्थापना को 'दैवी-विधान' की तरह बतला कर, पुस्तक को राजद्रोही होने के दोष से बचाने की भी चेष्टा की है। जब अँगरेजी सेना और संन्यासी-सेना का युद्ध समाप्त हो गया और समस्त सरकारी सिपाही मारे गये, तब संन्यासियों के नेता सत्यानन्द का अपने 'गुरुदेव' से जो एक योगसिद्ध महापुरुष थे जो वार्ता-लाप हुआ, उसमें गुरु ने यह कहा था कि "हिन्दू-धर्म पर अत्याचार करने वाले तो मुसलमान शासक थे, उनका अन्त हो गया। अब अँगरेज देश में शान्ति स्थापित करके स्थायी शासन की व्यवस्था करेंगे, यही दैवी विधान है।" जब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सत्यानन्द ने मुसलमानी शासन के नष्ट होने पर 'हिन्दू-शासन' स्थापित न हो सकने पर शोक प्रकट किया तो 'गुरुदेव' ने कहा—

'सत्यानन्द ! दुःखी न होओ। तुमने जिस प्रकार लूटमार कर धन एकत्रित किया और उसके द्वारा सैन्य सङ्गठन करके नबाव की सेना को पराजित किया, उससे देश उद्धार नहीं हो सकता। इस युद्ध को बढ़ाने से व्यर्थ में नर-हत्या ही होगी। सनातन-धर्म के उद्धार के लिये अब अँगरेजों का राज्य होना ही अवश्यम्भावी है। महापुरुषों ने इस बात को जिस प्रकार समझा है, उसी रूप में तुमको मैं उसे समझाता हूँ। तेतीस करोड़ देवताओं की पूजा 'सनातन धर्म नहीं है। यह एक लौकिक और हीनकोटि का धर्म है। सच्चा सनातन धर्म अब लुप्त हो चुका है। वह धर्म 'ज्ञानात्मक' है। ज्ञान भी दो प्रकार का होता है—एक बहिर्विषयक और दूसरा अन्तर्विषयक। जो अन्तर्विषयक ज्ञान है, वही सनातन धर्म का प्रधान भाग है। लेकिन बहिर्विषयक ज्ञान हुये बिना अन्तर्विषयक ज्ञान होना भी असम्भव है। स्थूल क्या है, इसे जाने बिना सूक्ष्म को भी नहीं जाना जा सकता। इस समय इस देश में बहुत दिन से बहिर्विषयक ज्ञान लुप्त हो गया है, फलतः यथार्थ सनातन धर्म भी लुप्त हो गया है। सनातन धर्म का पुनरुद्धार करना हो तो पहले बहिर्विषयक ज्ञान का प्रचार आवश्यक है। इस समय हमारे देश में ऐसे व्यक्ति नहीं हैं, जो बहिर्विषयक ज्ञान की समुचित शिक्षा दे सकें। इसलिये हमको वह ज्ञान किसी दूसरे देश से ही ग्रहण करना होगा। अँगरेज इस बहिर्विषयक ज्ञान और लोकशिक्षण में बहुत दक्ष हैं। इसलिये दैवी-शक्ति सम्पन्न महापुरुष इस अवसर पर अँगरेजों का शासन ही आवश्यक समझते हैं। जब तक हिन्दू इस भौतिक ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त करके शक्तिशाली नहीं बन जाते तब तक इनका ही शासन रहेगा।''

सम्भव है बङ्किम बाबू ने अपने उपन्यास को कानून के पंजे से बचाने के लिये, इस प्रकार की 'समझौते' की नीति से काम लिया हो, पर मुसलमानी शासन को हटाकर अँगरेजी राज्य की स्थापना को अन्य कितने ही विचारकों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने भी इसी रूप में स्वीकार किया। उनका मत है कि अँगरेजों ने देश के आर्थिक स्रोतों का शोषण कर अपने देश की शक्ति को खूब बढ़ाया यह तो सत्य है, पर उनके शासन के फलस्वरूप भारत में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का शीघ्रता पूर्वक प्रचार होकर वह एक संगठित राष्ट्र बन सका इसको भी स्वीकार करना ही होगा। कुछ भी हो 'आनन्दमठ' जिस 'देशभक्ति' की भावना को उत्पन्न करने के अभिप्राय से लिखा गया था, वह उससे अवश्य पूर्ण हो गया। एक समय था जब अँगरेज अधिकारी इस पुस्तक से ऐसे ही डरते थे जैसे बम के गोले से। उस समय स्वयं हम तथा हमारे मित्र इस पुस्तक को जिस प्रकार गुप्त रूप से पढ़ते थे, उसकी स्मृति ही इसकी श्रेष्ठता का अमिट प्रमाण है। आज भी उसके 'वन्दे मातरम्' गीत की कुछ पंक्तियाँ हृदय में गूँजती रहती हैं—

बन्दन करों सदा जननी को ॥
शोभित सुजल सुफल सों शीतल,
मलयानिल सों जुड़वत जी को ।
विमल – चाँदनी निशि लहराती,
प्रफुलित कुसुमित लता सुहाती ।
मधुर वचन हँसि वदन लखाती,
सुख वर दायिनि है सब ही को ।
बन्दन करों सदा जननी को ॥

कौन ऐसा भारत—सन्तान होगा जो ऐसी महिमान्वित और कल्याण-मयी माता के चरणों की वन्दना करके पुलकित न हो जाय और उसकी पुकार सुनकर सेवा के लिये कर्त्तव्य क्षेत्र में कूद न पड़े ? बङ्किम बाबू ने स्वयं उसी समय यह भविष्यवाणी कर दी थी कि "एक दिन 'वन्दे मातरम्' की ध्वनि से सारा भारत गूँज उठेगा।" और हम उनके स्वप्न को अपनी आँखों से सत्य होते देख चुके हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धर्म-तत्त्व—

बङ्किम बाबू ने केवल उपन्यास ही नहीं लिखे हैं, वरन् वे गम्भीर और तथ्यपूर्ण निबन्ध लिखने में भी किसी प्रकार कम न थे। उनके मासिक पत्र 'बङ्ग-दर्शन' में प्रकाशित बहुसंख्यक निबन्ध आज भी साहित्य की अमूल्य थाती समझे जाते हैं और पुस्तकों के रूप में प्रकाशित होकर लोकहित साधन कर रहे हैं। उनकी इस प्रकार की हास्य और व्यङ्ग की रचनाऐं 'कमला कान्त का दफ्तर' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं, जिसका साहित्य-जगत् में बड़ा नाम है। उसमें हमारी सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक त्रुटियों की ऐसी मार्मिक समालोचना की गई है और मीठी चुटकियाँ ली गई हैं कि एक बार पढ़नी आरम्भ करने पर पुस्तक को हाथ से रखने को जी नहीं चाहता।

पर उच्च कोटि के गम्भीर निबन्धों की दृष्टि से उनकी 'धर्म-तत्त्व नामक पुस्तक बहुत महत्त्वपूर्ण है। उसमें उन्होंने किसी खास धर्म के सिद्धान्तों की विवेचना न करके 'मानव-धर्म' के प्रमुख लक्षणों का ही वर्णन किया है। उन्होंने बतलाया है कि मनुष्य में जो कई प्रकार की शक्तियाँ हैं, जिनको हम 'वृत्ति' के नाम से पुकार सकते हैं, उन्हीं का अनुशीलन, विकास और चरितार्थ करने का नाम मनुष्यत्व है। इसी को हम मनुष्य का धर्म' भी कह सकते हैं। इन सब वृत्तियों का परस्पर सामञ्जस्य करके उन्हें जीवनोपयोगी और समाजोपयोगी बना लेना ही अनुशीलन की सीमा है और उसी को हम सच्चा सुख भी कह सकते हैं। इसको अन्य शब्दों में यों भी कह सकते हैं कि जब हमारे 'मन, वचन और कर्म' में पूर्ण एकता उत्पन्न हो जाती है, तो हम उसे पूर्ण मनुष्यत्व का लक्षण मान सकते हैं।

बङ्किम बाबू ने लिखा है कि "जब ज्ञान में पाण्डित्य, विचार में दक्षता कार्य में तत्परता, चित्त में धार्मिकता और सुरस में रसिकता आदि गुण एक स्थान पर पाये जाँय तभी मानसिक वृद्धि की पूर्णता मानी जा सकती है। इसके साथ ही सब प्रकार की शारीरिक उन्नति भी होनी आवश्यक है। अर्थात्

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शरीर बलिष्ठ, स्वस्थ तथा सब तरह के शारीरिक कार्यों में खूब दक्ष तथा अभ्यस्त होना चाहिये।

इस प्रकार 'धर्म-तत्त्व' में भारतीय जनता के सामने एक नया दृष्टिकोण उपस्थित किया गया है। हमारे देश में हजार व्यक्तियों में से दस-पाँच व्यक्तियों को छोड़ कर शेष सब लोग बाह्य पूजा-पाठ, तीर्थ—व्रत, जप-तप, ज्ञान-चर्चा, शास्त्र कथा—श्रवण आदि को ही पूरा 'धर्म' मानने लग गये हैं। ये बातें धर्म में सहायक अवश्य होती हैं, पर ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जो इन सब बातों को करते हुये भी घोर दुष्टता के कार्य करने में संकोच नहीं करते। वे दूसरों का सत्व अपहरण कर सकते हैं, पूरे परिवारों की हत्या कर सकते हैं। गरीबों का नृशंसतापूर्वक शोषण और उत्पीड़न कर सकते हैं, अदालत में झूँठे मुकदमे चला सकते और गवाही दे सकते हैं, खाद्य पदार्थों में हानि-कारक वस्तुओं की मिलावट करके समाज को हानि पहुँचा सकते हैं, व्यापार में हर तरह की धोखाधड़ी कर सकते हैं, अनाज को गोदामों में छिपा कर लाखों व्यक्तियों को भूखों मारने का कारण बन सकते हैं, और इन सब कामों को करते हुये भी धार्मिक' ही नहीं 'धर्ममूर्ति' भी कहला सकते हैं। कारण यही है कि लोग धर्म के सच्चे स्वरूप को भूल कर ऊपरी क्रियाकाण्ड को ही 'धर्म-पालन' समझने लग जाते हैं, और अपने मन में सन्तोष कर लेते हैं कि हम धर्म शास्त्रों के नियमों का पालन कर तो रहे हैं! धार्मिक-कर्मकाण्ड भी सामान्य लोगों में तत्सम्बन्धी भाव उत्पन्न करने में सहायक होते हैं, पर इस तरह की बातों के बहुत अधिक बढ़ जाने का यह परिणाम होता है कि लोग कुछ समय में उन्हीं को 'धर्म-सर्वस्व' समझ लेते हैं और जिस मानसिक शुद्धता और श्रेष्ठ कर्मों के अनुष्ठान के लिये उनको किया जाता है वे सब उनकी निगाह से ओझल हो जाते हैं।

'कृष्ण-चरित्र' में धर्म का आदर्श—

'धर्म-तत्त्व' में वर्णित धर्म के स्वरूप को समझाने, उदाहरण द्वारा उसे लोगों के हृदय में बैठा देने के उद्देश्य से बङ्किम बाबू ने 'कृष्ण-चरित्र'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की रचना की है। जब 'धर्म-तत्त्व' में वर्णित आदर्श धर्म के नियमों का पूर्णतः पालन कर सकना लोग असम्भव बतलाते हैं, और शङ्का करते हैं कि इस प्रकार मन—वचन—कर्म की उच्चता और एकता संसार में रहते हुये व्यवहार में नहीं लाई जा सकती, तो यह आवश्यक हो जाता है कि उनके सम्मुख कोई ऐसा उदाहरण उपस्थित किया जाय जिसकी सचाई में उनको विश्वास हो।

बङ्किम बाबू ने इस प्रकार के उदाहरण के लिए भगवान् कृष्ण को चुना है। वास्तव में धर्म के उपर्युक्त आदर्श के उच्च शिखर पर थोड़े ही व्यक्ति चढ़ सकते हैं। उनकी संख्या कभी बहुत अधिक नहीं हुई। विशेषतः वर्तमान समय में तो, जब एक हजार वर्ष की गुलामी के कारण हिन्दुओं के चरित्र में अनेक प्रकार की निर्बलता और दोषों ने घर कर लिया है, वे किसी ऊँचे आदर्श पर शीघ्र विश्वास भी नहीं कर पाते। पर भगवान् कृष्ण का उदाहरण ऐसा है जिसे वे पुराने समय से सुनते आये हैं और वर्तमान समय में भी उस पर श्रद्धा रखते हैं—चाहे वह 'अन्ध-श्रद्धा' ही क्यों न हो। इस श्रद्धा का उल्लेख करते हुये बङ्किम बाबू ने अपने ग्रन्थ के आरम्भ में ही कहा है—

"भारतवर्ष के अधिकांश और बङ्गाल के समस्त हिन्दू श्रीकृष्ण चन्द्र को भगवान् का अवतार मानते हैं। "कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्" इस पर सबका दृढ़ विश्वास है। बङ्गाल में प्रायः सब जगह कृष्ण की उपासना होती है। गाँव-गाँव में कृष्ण के मन्दिर हैं और घर-घर में कृष्ण की पूजा होती है। प्रायः प्रति मास कृष्ण का उत्सव होता है। प्रति उत्सव में कृष्ण की लीला होती है। सबके मुँह से कृष्ण के गीत और नाम सुनाई देते हैं। किसी के वस्त्र पर कृष्ण की नामावली है, तो किसी के शरीर पर ही कृष्ण के नामों की छाप है। कोई कृष्ण का नाम लिये बिना घर के बाहर पैर नहीं रखता, तो कोई कृष्ण का नाम लिखे बिना कुछ लिखता—पढ़ता नहीं। भिखारी कृष्ण का नाम लेकर भीख माँगते हैं। घृणा प्रकाश करने के समय भी 'हरे-कृष्ण'-'राधा-कृष्ण' कहते हैं। वन के पक्षी पालते हैं तो उन्हें भी राधाकृष्ण का नाम रटाते हैं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान् कृष्ण के प्रति इस प्रकार की श्रद्धा-भक्ति रखना कभी अनुचित नहीं कहा जा सकता। खास कर जब हम यह भी दृढ़ विश्वास रखते हैं कि श्रीकृष्ण भगवान् ही थे, उनमें और भगवान् में कोई अन्तर है ही नहीं, तब तो उनका स्मरण जितना अधिक और जिस विधि से किया जाय वह कल्याण-कारी ही होगा। पर इसमें कठिनाई यही उत्पन्न हो गई है कि भगवान् कृष्ण के चरित्र में स्वार्थी कथा-वाचकों और शृङ्गारी कवियों ने बहुत सी चमत्कारी और अश्लील कथाऐं गढ़कर मिलादी हैं। कहाँ तो भगवान् का वह गीता—उपदेश जिससे बढ़ कर स्पष्ट और व्यावहारिक धर्म-मार्ग दूसरा मिल ही नहीं सकता और कहाँ मक्खन चुराने और पराई स्त्रियों के साथ छेड़खानी करने की बातें। इसकी चर्चा करते हुये बङ्किम बाबू लिखते हैं—

"भगवान् को सदा स्मरण करते रहने की अपेक्षा मनुष्यों के लिये और कौन मंगलजनक कार्य हो सकता है? पर प्रश्न यहहै कि भगवान् को हम लोग क्या समझने लगे हैं? यही कि वे बचपन में चोर थे—दूध, दही, मक्खन चुरा कर खाया करते थे। युवावस्था में वे व्यभिचारी थे और अनेक पराई स्त्रियों का पातिव्रत धर्म उन्होंने नष्ट किया। प्रौढ़ावस्था में वे वंचक और शठ थे— उन्होंने धोखा देकर भीष्म और द्रोण जैसे पूज्य पुरुषों की हत्या कराई। क्या इसी का नाम 'भगवत्-चरित्र' है? जो केवल शुद्ध-सत्त्व है, जिससे सब प्रकार की शुद्धियाँ होती हैं और जिसके नाम से अशुद्धि एवं पाप दूर होते हैं, उसका मनुष्य देह धारण करके इस प्रकार के समस्त पाप करना क्या भगवान् को शोभा दे सकता है।

"सनातन धर्म के द्वेषी यह आरोप लगाया करते हैं कि 'भगवत्-चरित्र' की ऐसी कल्पना करने के कारण ही भारतवर्ष में पाप का स्रोत बढ़ गया है। इस आरोप का अभी तक कोई सफलतापूर्वक खण्डन नहीं कर सका है। मैं स्वयं श्री कृष्ण को भगवान् मानता हूँ और उन पर विश्वास करता हूँ। अँग्रेजी शिक्षा से मेरा वह विश्वास और भी दृढ़ हो गया है। पुराणों और इतिहास में भगवान् श्री कृष्ण का चरित्र कैसा वर्णन किया गया है यह जानने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के लिये जहाँ तक बना इन ग्रन्थों का मन्थन किया। इसका फल यह हुआ कि उनके सम्बन्ध में जो पाप-कथाएँ प्रचलित हैं, वे सर्वथा निर्मूल जान पड़ीं। कथाकारों और कवियों ने श्रीकृष्ण के विषय में जो मनगढ़न्त बातें लिखी हैं, उन्हें निकाल देने पर जो कृष्ण-चरित्र बचता है, वह अति विशुद्ध, परम पवित्र, अतिशय महान् मालूम हुआ। मुझे यह भी अनुभव हुआ कि ऐसा सर्वगुण सम्पन्न, सर्वपापरहित आदर्श चरित्र कहीं नहीं है। न किसी देश के इतिहास में है और न किसी काव्य में।"

"कृष्ण-चरित्र' की भूमिका में ही लेखक ने यह स्पष्ट कह दिया है कि "श्रीकृष्ण के मानव-चरित्र की आलोचना करना ही मेरा उद्देश्य है। मैं उन्हें ईश्वर मानता हूँ, यह बात भी मैंने कहीं नहीं छिपाई है। किन्तु सब पाठक भी मेरे उस विश्वास को स्वीकार कर लें इसके लिये मैंने कोई प्रयत्न नहीं किया है।" बंकिम बाबू की इस नीति को कोई बुरा नहीं कह सकता। राम और कृष्ण के कार्यों में जगह-जगह अलौकिकता अथवा चमत्कारी घटना सम्मिलित कर देने का ही यह परिणाम हुआ है कि लोगों ने उनके प्रति मौखिक श्रद्धा तो रखी पर उनके उदाहरण से लाभ उठाना छोड़ दिया। जब कोई मौका आया तो लोग यही कहकर अलग हो गये कि "वे तो भगवान् थे, हम उनका अनुकरण कैसे कर सकते हैं?" यह एक बड़ी हानिकारक प्रवृत्ति है, जिससे हम अपने धर्म ग्रन्थों में वर्णित सभी श्रेष्ठ आदर्शों से लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं। सम्भव है कि किसी जमाने में कथा कहने वाले विद्वानों ने अवतार-कथाओं में ये चमत्कारी अंश इसलिये जोड़ दिये हों कि इनके प्रभाव से सामान्य और अपढ़ जनता धर्म कर्म में विश्वास बनाये रहेगी, पर इस समय तो उनका परिणाम विपरीत ही दृष्टिगोचर हो रहा है। इसलिये यह आवश्यक है कि इन दैवी महामानवों के चरित्र पर मानव-दृष्टि से ही विचार किया जाय जिससे लोग उनके द्वारा उपस्थित किये आदर्श पर अपनी सामर्थ्य और परिस्थिति के अनुसार न्यूनाधिक अंशों में चलने का प्रयत्न करने लगें। इन उदाहरणों की वास्तविकता और महत्ता का वर्णन करते हुये बंकिम बाबू ने लिखा है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"यह सच है कि उपासक की प्रथम अवस्था में निराकार परमेश्वर उसका आदर्श नहीं हो सकता। वरन् ईश्वर के अनुरूप मनुष्य, अर्थात् जिनमें गुणों की अधिकता के कारण ईश्वरांश मालूम होता है अथवा जो 'देहधारी ईश्वर' प्रतीत होते हैं, वे ही उनके आदर्श हो सकते हैं। इसीलिये ईसामसीह क्रिस्तानों के और गौतम बुद्ध बौद्धों के आदर्श हैं। पर धर्म में प्रवृत्त करने वाला जैसा आदर्श हिन्दू शास्त्रों में है, वैसा संसार के और किसी धर्म में नहीं हैं, न किसी जाति में है। जनकादि राजर्षि, नारदादि देवर्षि, वशिष्ठादि ब्रह्मर्षि सबके सब धर्म के परम आदर्श हैं। रामचन्द्र युधिष्ठिर अर्जुन, लक्ष्मण, भीष्म आदि क्षत्रिय भी सम्पूर्णता प्राप्त आदर्श हैं। ईसामसीह और गौतम बुद्ध केवल उदासीन, कोपीनधारी और मोहरहित धर्मवेत्ता थे। वह सर्वगुण सम्पन्न नहीं थे। पर हिन्दुओं के आदर्श पुरुषों का सर्वाङ्गसुन्दर विकास हुआ है। यह सिंहासनासीन होकर भी उदासीन हैं। धनुर्धारी होकर भी धर्मवेत्ता हैं। राजा होकर भी पण्डित हैं। शक्तिमान होकर भी प्रेममय हैं। हिन्दुओं का एक आदर्श और है, जो इन सबसे भी बढ़ा-चढ़ा है। यह वही आदर्श है जिससे युधिष्ठिर ने धर्म सीखा, अर्जुन जिसका शिष्य हुआ राम-लक्ष्मण जिसके अंश स्वरूप हैं और जिसके चरित्र के समान महामहिमामय चरित्र मनुष्य-भाषा में कभी वर्णित नहीं हुआ। वह आदर्श भगवान् कृष्ण का है।"

श्री कृष्ण चरित्र को चमत्कारी घटनाऐं निकाल कर आदर्श मानव की दृष्टि से लिखने पर कितने ही व्यक्ति बंकिम बाबू के विरोधी बन गये। उनके जीवन-चरित्र के एक लेखक ने लिखा है कि 'बङ्किम बाबू ने श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में प्रसिद्ध सभी कथाओं को स्वीकार नहीं किया। बहुत सी घटनाओं को इन्होंने क्षेपक कह कर छोड़ दिया था। इसलिये 'कृष्ण-चरित्र' लिखने पर उनको खूब गालियाँ भी सुननी पड़ीं।" पर हम जानते हैं कि हर प्रकार गाली देने वाले दो ही प्रकार के व्यक्ति हो सकते हैं। एक तो अज्ञानी अन्ध-भक्त और दूसरे कथा कहकर धन कमाने वाले पण्डितजी। ये लोग अपने अज्ञान अथवा स्वार्थ के कारण ही बिना सोचे-समझे और बिना किसी प्रमाण के सभी विवेकयुक्त बातों का विरोध करने लग जाते हैं। यदि वे धर्म-शास्त्रों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का अच्छी तरह मनन करें तो उनमें भी श्रीकृष्ण और श्री राम आदि को ईश्वरावतार मानते हुये भी यह कहा गया है कि उन्होंने जो कुछ किया वह 'मनुष्य' की हैसियत से ही किया। यदि उनको अपनी दैवी-शक्ति से ही काम लेना था, तो मनुष्य रूप धारण करने की क्या आवश्यकता थी, वे अपनी इच्छा मात्र से ही हर तरह का परिवर्तन कर सकते थे। 'विष्णु पुराण' में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुये कहा गया है—

मनुष्य धर्मशीलस्य लीला सा जगतः पतेः।
अस्त्राण्यनेक रूपाणि यदरातिषु मुंचति ॥१४॥
मनसैव जगत्सृष्टि संहारंच करोति यः।
तस्यारिपक्ष क्षपणे कोऽयमुद्यमविस्तरः ॥१५॥
तथापि यो मनुष्याणां धर्मस्तमनु वर्तते।
कुर्वन बलवता सन्धि हीनैर्युद्धं करोत्यसौ ॥१६॥
सामचोप प्रदानंच तथाभेद प्रदर्शयन्।
करोति दण्डपातंच कंचिदेव पलायनम् ॥१७॥
मनुष्य देहिनां चेष्टामित्येवमनु वर्ततः।
लीला जगत्पतेस्तस्य छन्दतः संप्रवर्तते ॥१८॥
(अंश ५, अध्याय २२)

अर्थात्—"जगतपति होकर भी उसने शत्रुओं पर जो अस्त्र चलाये वह मनुष्य-धर्म के कारण उसकी लीला है। अन्यथा जो मन से ही जगत् की सृष्टि और संहार करते रहते हैं, वह विनाश के लिए इतना उद्यम क्यों करेगा? पर वह संसार में आकर मनुष्य-धर्म का अनुसरण करता है, इसलिये वह बलवान के साथ सन्धि कर लेता है, और निर्बल से युद्ध करता है। वह साम, दाम, दण्ड, भेद से काम लेता है और कभी मौका देखकर भाग भी जाता है। इस प्रकार मनुष्य-धर्म का अनुसरण करने वाला वह जगत-पति अपनी इच्छा से लीलाएँ करता है।"

निस्संदेह विष्णुपुराणकार का यह कथन सर्वथा युक्तियुक्त है कि यद्यपि भगवान् कृष्ण दैवी शक्तियों से युक्त थे, पर मनुष्य-समाज में रहकर वे उसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकार का उदाहरण उपस्थित करना चाहते थे, जिसका अनुकरण अन्य मनुष्य भी कर सकें। दैवी-शक्ति से काम लेकर किसी कठिन समस्या को हल करने से मानवता के विकास में कोई सहायता नहीं मिलती, उल्टा लोग कहने लगते हैं कि यह तो ईश्वरीय शक्ति का कार्य है, हम उसे कैसे कर सकते हैं ? इस लिये बङ्किम बाबू ने श्रीकृष्ण के प्रति भगवान् के रूप में भक्ति रखते हुये भी उनके उन्हीं कार्यों का वर्णन किया है जो मानव-शक्ति से सम्भव हैं। उन्होंने कृष्ण भगवान् की विविध शक्तियों का परिचय देते हुये ग्रन्थ के अन्त में यह निष्कर्ष निकाला है—

"भगवान् कृष्ण समस्त मानव-गुणों के प्रकाश से पूर्ण तेजस्वी थे। वह अपराजेय, अपराजित, विशुद्ध, पुण्यमय, प्रेममय, दयामय, दृढ़कर्मी, धर्मात्मा, वेदज्ञ, नीतिज्ञ, धर्मज्ञ, लोकहितैषी, न्यायशील, क्षमाशील, निरपेक्ष, शास्ता, निरहंकार योगी, और तपस्वी थे। वे मानुषी शक्ति से कार्य करते थे, परन्तु उनका चरित्र अमानुषी था। अब पाठक अपनी बुद्धि से ही निर्णय करें कि जिसकी शक्ति मानुषी और चरित्र मनुष्यातीत था वह कौन हो सकता है ? जो श्रीकृष्ण को मनुष्य-भाव से देखते हों वे उनको कम से कम योरोपियन विद्वान् राइस डेविड्स के मतानुसार गौतम बुद्ध के तुल्य तो मान ही लें। राइस डेविड्स ने बुद्ध को "हिन्दुओं में सबसे बड़ा ज्ञानी और महान् पुरुष" लिखा है। और जिसको श्रीकृष्ण के कार्यों में 'भगवत्-चरित्र' की झलक दिखाई दे वे अन्त में हमारे साथ हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहें—

नाकृणात् करणाद्वा कारणाकारणान्न च।
शरीर ग्रहणं वापि धर्मत्राणाय ते परम्॥

"जो न हो सकने योग्य कार्य को भी करने में समर्थ हैं और कारणों के भी कारण हैं वे ही धर्म की रक्षा के लिये मनुष्य शरीर को ग्रहण करके मानव-चरित्र करते हैं।"

निस्सन्देह बङ्किम बाबू के इस कथन में कुछ भी अत्युक्ति नहीं कि भगवान् श्रीकृष्ण के समान आदर्श चरित्र वाला कोई महापुरुष संसार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अब तक दूसरा नहीं हुआ यद्यपि मनुष्यों का मार्ग प्रदर्शन करने के लिये दैवी-आत्माऐं सभी देशों और युगों में अवतीर्ण होती रहती हैं, पर अभी तक भगवान् कृष्ण से बढ़कर अथवा उनके तुल्य दैवी-प्रकाश और किसी में देखने में नहीं आया। पर उनके चरित्र का वास्तविक मूल्यांकन करने के लिये आवश्यक है कि महाभारत और पुराणों में वर्णित कृष्ण-कथा में से अस्वाभाविक अंशों को निकाल कर उनके विशुद्ध परोपकार, दुष्ट दमन और सज्जनों की रक्षा के कार्यों का दिग्दर्शन कराया जाय। बङ्किम बाबू ने 'कृष्ण-चरित्र' लिख कर इसी उद्देश्य की पूर्ति की है जिसके लिये वे निश्चय ही सभी सत्य—धर्मानुयायिओं की प्रशंसा के पात्र माने जायेंगे।

प्रशंसनीय साहस और आत्म-गौरव ----

बङ्किम बाबू उन मनुष्यों में से नहीं थे जो बड़े-बड़े सिद्धान्तों को पुस्तकों में तो लिख देते हैं, पर स्वयं उनसे विपरीत आचरण करते हैं। इसी कारण अनेक विद्वानों की रचनाऐं और भाषण आदि लोगों पर कुछ प्रभाव नहीं डाल सकते। बङ्किम बाबू ने 'धर्म-तत्त्व' और 'कृष्ण-चरित्र' में आदर्श मनुष्य के जो लक्षण बतलाये थे वे स्वयं उनके अनुसार आचरण करने की चेष्टा करते थे। वे सरकारी नौकरी करते थे, तो अपने उत्तरदायित्व का पूर्ण रूप से निर्वाह करने का प्रयत्न करते थे। उनके ३३ वर्ष के सेवाकाल में कितने ही अवसर बड़े खतरे के आये पर उन्होंने कभी कर्त्तव्य-पालन से पैर पीछे नहीं हटाया, और अपने साहस तथा सत्य-निष्ठा के बल पर उसे सफलता पूर्वक पार कर लिया।

जिस समय बङ्किम बाबू एक उच्च सरकारी पद पर कार्य करने लगे थे उस समय की परिस्थिति आज से बहुत भिन्न थी। तब इंगलैण्ड और भारत दोनों देशों की सरकारों का यह उद्देश्य रहता था कि किसी भी तरह भारत में काम करने वाले अँगरेज अफसरों के रौब-दाब में कमी न आने पावे। वे जानते थे कि भारतवर्ष में अँगरेजों की संख्या बहुत थोड़ी रहती है, और वे उस देश पर तभी शासन कर सकते हैं जब उनका आतंक और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

योग्यता का सिक्का भारतवासियों पर जमा रहे। इस सम्बन्ध में अँगरेजों और एँग्लोइंडियन लोगों के विचार कैसे कट्टरतापूर्ण और संकीर्ण थे इसके लिये हम भारतभक्त एण्डरूज के जीवन चरित्र से एक ऐसा उदाहरण देना पर्याप्त समझते हैं। वे सन् १९०४ में जब इंगलैण्ड से भारतवर्ष आये और एक कालेज में प्रोफेसर का कार्य करने लगे तो उनके भारतवासियों के प्रति मित्रता के भावों को देखकर अनेक अँगरेज उनको इस प्रकार समझाया करते थे—

"कभी किसी हालत में किसी 'नेटिव' (भारतीय) से मत दबना और न किसी नेटिव' के दिल में यह ख्याल आने देना कि वह तुमसे ऊँचा है। हम भारतवर्ष पर केवल एक ही उपाय से राज्य कर सकते हैं और वह यही है कि हम अपनी 'पोजीशन' (दर्जे) को ऊँचा बनाये रखें। यद्यपि आप 'मिशनरी' (पादरी) हैं, तो भी अपने आपको पहले अँगरेज समझना होगा। इस बात को कदापि न भूलें कि आप 'साहब' हैं।"

जब सन् १९०४ में यह दशा थी तो उससे चालीस वर्ष पहले, जब कि गदर होकर ही चुका था और उसमें अँगरेजों ने बड़े-बड़े भारतीयों को बुरी तरह कुचला था, अँगरेजों का आतंक देश पर कितना अधिक होगा इसका अनुमान कर सकना कठिन नहीं है। पर उस जमाने में भी बङ्किम बाबू ने 'भारतीयता' के गौरव को किस प्रकार अक्षुण्ण रखा, इस सम्बन्ध में बहरामपुर की एक घटना हम अन्यत्र लिख चुके हैं। उसके अतिरिक्त भी उन्होंने अनेक बार अँगरेजों से टक्कर लेकर जातीय—गौरव के भाव का प्रमाण दिया उनमें से एकाध घटना का वर्णन अप्रसांगिक न होगा।

अँगरेज लुटेरों का दमन—

जिस समय बङ्किम बाबू की बदली बङ्गाल के खुलना जिले में हुई तो वहाँ उन्होंने नील की खेती करने वाले अँगरेजों को किसानों पर बड़ा अत्याचार करते देखा। इनमें सबसे मशहूर मारेल साहब था जिसने मारेलगंज नाम का एक गाँव ही बसा लिया था। यह पाँच-छः सौ आदमी लाठी चलाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले उसने अपने पास रख छोड़े थे, जिनके बल पर वह अपना आतंक लोगों पर कायम किये हुए था। पर एक गाँव 'बड़खाली' पर उसका बस नहीं चलता था, क्योंकि वहाँ के निवासियों में बड़ी एकता थी और वे मिल कर आतंककारियों का मुकाबला करते थे। एक बार किसी बात पर विशेष नाराज होकर मारेल साहब ने 'बड़खाली' गाँव पर धावा बोल दिया। दोनों पक्षों में बड़ा घोर संग्राम हुआ। जब मारेल साहब का दल दबने लगा तो उनके 'दल-पति' हेली साहब ने बन्दूक चलाना शुरू किया और 'बड़खाली' के नेता रही मुल्ला को मार दिया। बन्दूक के भय से गाँव वाले भाग गये तो मारेल साहब के दल ने गाँव को मनमाना लूटा, औरतों को बेइज्जत किया और घरों को जला दिया।

जैसे ही इस 'गदर' का समाचार बङ्किम बाबू को मिला वे पुलिस का एक दल लेकर शीघ्रता पूर्वक 'बड़खाली' की तरफ चले। पर तब तक मारेल साहब की 'विजयी सेना' लूट का माल और स्त्रियों को भी लेकर अपने गाँव में पहुँच चुकी थी। बङ्किम बाबू के आने का समाचार सुनकर मारेल साहब और हेली साहब अपने साथियों के साथ भाग निकले। तो भी बङ्किम बाबू ने पीछा करके उनमें से कितनों को ही पकड़ा और एक को फाँसी तथा पच्चीस को काले पानी का दण्ड दिलाया। इस घटना से अँगरेजों में बड़ी खलबली मच गई और लोगों में यह चर्चा होने लगी कि "अँगरेजों ने उस आदमी को एक लाख रुपया इनाम देने की घोषणा की है जो बङ्किम बाबू को जान से मार देगा।" पर बङ्किम बाबू ने कभी इस पर ध्यान न दिया और निर्भीकता पूर्वक अपना काम करते रहे।

इसी प्रकार हबड़ा में एक गरीब बुढ़िया पर म्युनिसपैलिटी वालों ने व्यर्थ का मुकदमा चलाया और कहा कि उसने सरकारी आज्ञा की अवहेलना की है। बङ्किम बाबू ने उसमें सरकारी अधिकारियों की ही भूल समझ कर बुढ़िया को छोड़ दिया। इस पर हवड़ा के कलक्टर बकलैण्ड साहब बहुत असन्तुष्ट हुये और उन्होंने उस मिसिल पर बङ्किम बाबू के फैसले के विरुद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक नोट (टिप्पणी) लिख दिया। इस पर बङ्किम बाबू भी बिगड़ उठे कि "आपने किस नियम से मेरे फैसले के विरुद्ध लिखा है ? आप एक महीने के भीतर मुझसे क्षमा माँगिये और सब कागजात कमिश्नर साहब के पास भेज दीजिये।" बकलैण्ड साहब पहले तो अकड़े रहे, पर जब बङ्किम बाबू लगातार उच्च अधिकारियों को लिखते रहे तो उनको क्षमा माँगनी ही पड़ी।

इन घटनाओं में बंकिम बाबू का भाव किसी प्रकार के अहङ्कार अथवा हठवादिता का न था। वे समझते थे कि अँगरेज जातीय दृष्टि से अपने को प्रत्येक भारतवासी से श्रेष्ठ समझते हैं और उनका अपमान कर देना साधारण बात मानते हैं। इसी मनोवृत्ति का विरोध करने के लिये वे किसी भी अन्याय को देखकर अँगरेज अफसरों से लड़ जाते थे और अपनी योग्यता और सूझ-बूझ के आधार पर उनको परास्त भी कर देते थे।

बंकिम बाबू की प्रतिभा और ख्याति—

बङ्किम बाबू ने अपनी अधिकांश रचनाओं में आदर्श चरित्र—चित्रण ही किया है। यद्यपि आज-कल 'उच्च श्रेणी' के साहित्यकार 'कला—कला के लिए' की आवाज उठाया करते हैं, पर कम से कम उस युग में अधिकांश श्रेष्ठ लेखक जो कुछ लिखते थे उसका उद्देश्य लोगों को सदुपदेश देकर सत्मार्ग दिखलाना ही होता था। जिन बुरे लोगों का वर्णन किया जाता था, उनका परिणाम सदा शोचनीय ही दिखलाया जाता था। वे लेखक अपने सामने यही लक्ष्य रखते थे कि उनकी रचनाओं द्वारा सत्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिले और दुष्ट वृत्तियों को जहाँ तक सम्भव हो दबाया जाय।

बंकिम बाबू के उपन्यासों में जितने स्त्री—पात्र आये हैं, उनका चरित्र उन्होंने प्रायः उच्च, पवित्र और अनुकरणीय दिखलाया है। यद्यपि बंगाल के पुरुष युद्ध-विद्या और तलवार चलाने में प्रसिद्ध नहीं हैं, पर बंकिम बाबू ने बङ्गाली स्त्रियों को भी तलवार चलाते और वीरता प्रकट करते दिखाया है। इसका उद्देश्य यही था कि बंगाली अपनी त्रुटि को दूर करके यथाशक्ति वीर बनने का प्रयत्न करें और जीवन-संग्राम में प्रशंसनीय ढङ्ग से जूझना सीखें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सन् १८९१ में बंकिम बाबू ने बहुत चेष्टा करके पेंशन ली। उनकी इच्छा थी कि वे अपना पूरा समय और शक्ति साहित्य-सेवा में ही लगावें। उस समय तक उनकी रचनाओं का आदर समस्त भारत में ही नहीं होने लगा था, वरन् तीन-चार उपन्यास अँगरेजी में अनुवादित किये जाकर इङ्गलैण्ड में भी प्रकाशित किये गये थे। पर लगातार अधिक परिश्रम करते रहने से उनका स्वास्थ्य निर्बल पड़ गया। सन् १८९४ में उनकी बहुमूत्र की बीमारी जोर पकड़ गई और मूत्र नली में एक फोड़ा भी हो गया। इसका बहुत कुछ इलाज किया गया और आपरेशन भी हुआ। पर कोई चिकित्सा कारगर न हुई और उसी वर्ष उन्होंने समस्त साहित्य-जगत् को शोक संन्तप्त छोड़ कर परलोक प्रयाण किया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

राष्ट्र निर्माता बंकिम—

वर्तमान युग राजनीति—प्रधान है और इस कारण बहुत से लोग यह समझा करते हैं, कि समाज के मार्ग दर्शक और उद्धारक राजनीतिक व्यक्ति ही हो सकते हैं। जो कोई सभा-मञ्च पर खड़ा होकर जितने जोर से भाषण कर सकता है, देश के शासकों या विरोधी दलों पर तीव्र आघात कर सकता है, समाज-सुधार और राष्ट्र निर्माण की बड़ी-बड़ी योजनाऐं उपस्थित कर सकता है, वही उनकी दृष्टि में देशभक्त और समाज का नेता कहलाने का अधिकारी होता है।

इस दृष्टि से यदि विचार किया जाय तो बंकिम बाबू एक लेखक मात्र थे और वह भी मुख्यतया उपन्यासों के। वर्तमान समय में लेखकों की कमी नहीं है, वरन् उनकी संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही जाती है। छापेखानों और प्रकाशकों की वृद्धि होने के साथ-साथ नये-नये लेखकों का प्रादुर्भाव होना स्वाभाविक भी है। प्रेस वालों को छापने के लिये कुछ काम चाहिये और प्रकाशकों को भी अपना धन्धा जारी रखने के लिये बढ़िया या घटिया कैसी भी रचनाओं को प्रकाशित करना आवश्यक है। इसलिये यदि आजकल के पाठक लेखकों को सामान्य श्रेणी का मनुष्य अथवा अन्य धन्धे-रोजगारों की तरह एक पेशा करने वाला ही समझने लगें तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर बंकिम बाबू की साहित्य-सेवा का लक्ष्य राष्ट्र को जागृत करके जातीयता के मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा देना ही था। पर सरकारी नौकर होने के कारण वे प्रत्यक्ष रूप से इस कार्य को नहीं कर सकते। अतः उन्होंने साहित्य-सेवा के मार्ग को अपनाया और ऐसे ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यासों की रचना की जिनसे देशवासियों को अपने कर्त्तव्य का बोध हो सके। अनेक व्यक्ति साहित्य की महान शक्ति को नहीं समझ पाते, यद्यपि इतिहास इस बात का साक्षी है कि संसार में अनेक युद्ध और क्रान्तियाँ साहित्यिक रचनाओं में सन्निहित उद्दाम प्रेरणाओं द्वारा ही जीते गये हैं। बङ्किम बाबू ही नहीं, उनके अनुयायी के तुल्य महाकवि रवीन्द्र नाथ ने भी साहित्य द्वारा ऐसी मार्मिक भावनाओं को जन्म दिया है। उनकी अनेक कविताऐं इसका ज्वलन्त उदाहरण हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि भारतवर्ष में इस प्राणोत्पादक विचार-धारा को जन्म देने वालों में बङ्किम बाबू प्रथम और प्रमुख हैं, उनसे पहले भारतीय साहित्य में या तो प्राचीन ग्रन्थ थे, या अधिकांश में निरर्थक काव्य-साहित्य, या साधारण कोटि की समाज सुधार सम्बन्धी रचनायें थीं। बङ्किम बाबू ने ही सर्वप्रथम आधुनिक युग के अनुकूल प्रेरणादायक साहित्य का सृजन किया जो विविध रूपों में विकसित होकर आज तक भारतीय जनता को प्रभावित कर रहा है।

मुद्रक—वृन्दावन शर्मा, जन-जागरण प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन कथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिख कर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पै०

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org